वाद-विवाद

एक दिन स्कूल में यह विवाद छिड़ गया कि गाँव अच्छे हैं या शहर । गाँव के रहनेवालों ने गाँव का पक्ष लिया तो शहर वासियों ने शहर का । गुरुजी ने कहा- अच्छा, एक दिन किसी गाँव में चलकर देखेंगे ।

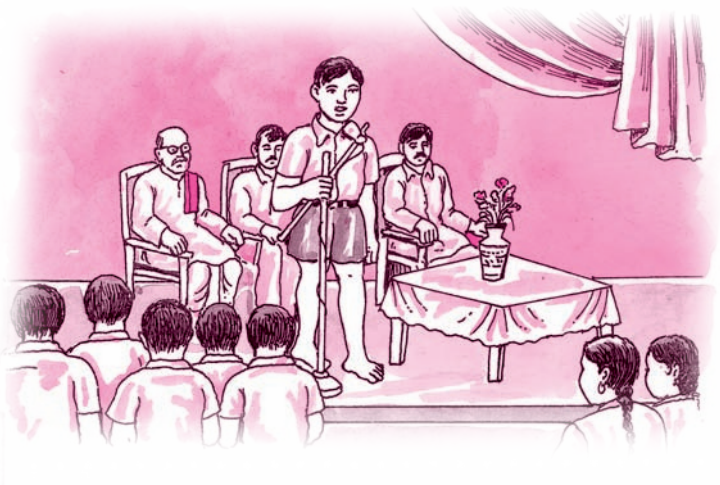

एक दिन कुछ छात्र-छात्राएँ एक गाँव में गए । वहाँ के पेड़-पौधे, खेती-बारी, साफ मुक्त हवा से सभी खुश हुए-

फिर उन लोगों ने देखा कि गाँव के घर-आँगन उतने साफ-सुथरे नहीं हैं । मवेशी खाने, मुर्गी के दरबे गंदे हैं । लोग जिस तालाब में नहाते हैं, वहीं कपड़े धोते हैं, मवेशियों को नहलाते हैं।

न कोई अस्पताल न कोई बाजार, न बिजली । जो भी है, सब नाकाफी। लोगों के बीच पहले जैसा भाईचारा भी नहीं रहा । यह जरूरी है कि गाँव का सरल, साफ, प्यारभरा माहौल बनाए रखा जाए ।

गुरुजी ने कहा-गाँव तो बहुत अच्छे हैं, पर यहाँ के माहौल को बदलना पड़ेगा। इसे अधिक साफ-सुथरा, स्वस्थ बनाना होगा । रास्ते बनाने होंगे । बिजली, टेलीफोन, डाकखाने, अस्पताल आदि का इंतजाम करना होगा ।

फिर एक दिन सब लोग शहर घूमने गए।

वापस आए तो कई छात्र-छात्राओं ने ऐसे विचार व्यक्त किए- शहर के ये बड़े-बड़े मकान, चौड़े रास्ते, दोनों तरफ के छायादार पेड़, बिजली की चकाचक रोशनी सबका मन मोह लेती है ।

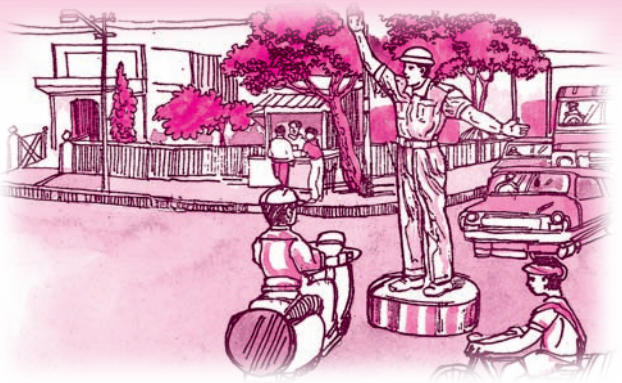

शहर में पढ़ने की सुविधा है । बीमारों का इलाज हो सकता है । काम मिलते हैं । लोग पैसा कमा सकते हैं । आराम से रहते हैं । पर यहाँ फुर्सत ही नहीं है । एक दूसरे के साथ बात ही नहीं करता। शहर में पेड़-पौधे कम ही हैं। गंदी बस्तियाँ, गंदे नाले होते हैं। यहाँ बड़ी भीड़ रहती है। साँस लेने को खुली हवा तक नहीं मिलती। सड़कों पर उड़ती धूल और गाड़ी-मोटरों से निकलते धुएँ से दम घुटने लगता है।

यह सब देख–सुनकर एक सयानी लड़की ने कहा–

शहर कई मायने में अच्छे हैं । लेकिन आजकल यहाँ की आबादी बढ़ रही है। साफ हवा, साफ पानी की किल्लत है । हवा दूषित हो गयी है । इसे रोकना होगा । भाईचारा बढ़ाना होगा । व्यक्तिगत जीवन के सुखों के साथ मानवीय भावों को पनपाना होगा ।

अभी हमें बहुत कुछ करना है

आपके लिए काम :

१) इस विषय में दोनों पक्षों के अच्छे–बुरे के कारण ढूँढ़िए ।

२) एक ऐसा विवादीय विषय चुनकर उसके दोनों पक्षों पर चर्चा कीजिए ।

व्याकरण के पृष्ठ

शब्द – ''एक ध्वनि या ध्वनि–समूह को 'शब्द' क़हते हैं जिसका कोई अर्थ हो'' ।

जैसे – मैं, तुम, अमरूद, लड़की, गाय, गधा, पढ़ना, खाना, पीना आदि ।

किसी वाक्य में प्रयोग किए जाने वाले शब्द आठ प्रकार के होते हैं :

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया–विशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक ।

संज्ञा– ''किसी व्यक्ति, प्राणी, भाव, वस्तु या स्थान आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं ।'' ज़ैसे–मीरा, राम, गंगा, हिमालय, गंगोत्रि, सुंदरता, भेड़, पुस्तक आदि ।

संज्ञा के मुख्य रूप से पाँचभेद हैं:

व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी व्यक्ति, स्थान या किसी वस्तु विशेष का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे – राम, लक्ष्मण, शकुंतला, ताजमहल आदि ।

जातिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से एक जाति या जाति के सभी पदार्थों का बोध हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं । जैसे – भेड़, बकरी, आदमी, पुस्तक आदि ।

भाववाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी गुण, दशा, भाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं ।

जैसे – सुंदरता, बाल्यावस्था, पढ़ाई, कायरता आदि ।

समूहवाचक संज्ञा - जिस शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के समूह का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं जैसे- कक्षा, परिवार, झुंड, गुच्छा, मंडली आदि।

द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस शब्द से किसी वस्तु या द्रव्य का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, घास, पानी, चाए, चाँती, लकडी आदि

सर्वनाम – ''जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं।''

जैसे – मैं, हम, तू, जो, वह, आप, यह, वह, कुछ, कोई आदि।

सर्वनाम के छह भेद हैं :

१. पुरुषवाचक २. निश्चयवाचक ३. अनिश्चयवाचक

४. संबंधवाचक ५. प्रश्नवाचक ६. निजवाचक

१. **पुरुषवाचक सर्वनाम :** ''जो सर्वनाम किसी पुरुष या स्त्री के नाम के स्थान पर बोले जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।'' जैसे – तुम, वह, मैं, वे, यह आदि।

जैसे : वह गाँव जाता है ।

२. **निश्चयवाचक सर्वनाम :** ''निश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध हो ।''

जैसे – यह, ये, वह, वे आदि ।

जैसे – यह आम मीठा है, **वह** घड़ी है ।

३. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम :** ''अनिश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो ।''

जैसे : कोई, कुछ ।

जैसे : ऐसा न हो कि **कोई** आ जाए ।

उसने **कुछ** नहीं खाया ।

४. **संबंधवाचक सर्वनाम –** ''संबंधवाचक सर्वनाम वे हैं जो एक सर्वनाम का दूसरे सर्वनाम के साथ संबंध प्रकट करते हैं ।

जैसे : जो देता है, **सो** लेता है ।

जैसा करोगे, **वैसा** भरोगे ।

जिसकी लाठी, **उसकी** भैंस ।

५. **प्रश्नवाचक सर्वनाम –** ''प्रश्नवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी प्रश्न का बोध हो ।''

जैसे – तुम **क्या** खा रहे हो ?

अंदर **कौन** है ?

६. **निजवाचक सर्वनाम :** ''निजवाचक सर्वनाम वे हैं, जहाँ वक्ता अपने लिए 'आप' शब्द का प्रयोग करता है ।'' जैसे– यह काम मैं स्वयं कर लूँगा । मैं अपने आप खाना बना रहा हूँ ।

❖ क्रिया – ''जिस शब्द से काम का करना या होना जाना जाए, उसे क्रिया कहते हैं । जैसे– जाता है, दौड़ता है, पढ़ा, गाया, खाएगा आदि ।

❖ लिंग – 'लिंग' का अर्थ है 'चिह्न' । संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति की जाति का बोध हो, उसे लिंग' कहते हैं । हिंदी में दो लिंग होते हैं– पुल्लिंगऔर स्त्रीलिंग ।

पुल्लिंग– पिता, पुत्र, बंदर, पुजारी, मोर, बाल, वृद्ध, स्वामी, तपस्वी आदि ।

स्त्रीलिंग– माता, पुत्री, बंदरिया, पुजारिन, मोरनी, बाला, वृद्धा, स्वामिनी, तपस्विनी आदि ।

❖ वचन– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं । हिंदी में वचन दो– एकवचन और बहुवचन हैं :–

एकवचन - ''शब्द के जिस रूप से एक ही प्राणी या पदार्थ का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं।'' जैसे- तोता, घोड़ा, भैंस, गाय, पुस्तक, नदी आदि।

वहुवचन - ''शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे- तोते, घोड़े, भैंसें, गायें, पुस्तकें, नदियाँ आदि।

❖ विशेषण– ''जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करे, उसे विशेषण कहते हैं । जैसे– काला घोड़ा, सफेद फूल ।

❖ विशेष्य– जिसकी विशेषता बतलायी जाए, वह 'विशेष्य' कहलाता है ।'

जैसे– 'काला घोड़ा' में 'काला' विशेषण है और 'घोड़ा' विशेष्य । 'अच्छा विद्यार्थी' में 'अच्छा' विशेषण है और 'विद्यार्थी' विशेष्य । 'तीस घोड़े' में 'तीस' विशेषण है और 'घोड़े' विशेष्य । इसी प्रकार दुबला आदमी, पालतू कुत्ता, गहरा कुआँ आदि ।

❖ क्रिया विशेषण– ''जिस शब्द से 'क्रिया' या दूसरे 'क्रिया–विशेषण' की विशेषता प्रकट हो, उसे 'क्रिया–विशेषण' कहते हैं ।

जैसे– राम धीरे–धीरे टहलता है । राम वहाँ टहलता है । वह अचानक आ गया। वह प्रतिदिन मंदिर जाता है । पहले तौलो, फिर बोलो । उतना खाओ जितना हजम हो । अब मैं क्या करूँ ? आदि । 'वह धीरे चलता है ।' इस वाक्य में 'धीरे' क्रिया–विशषण है । 'वह बहुत धीरे चलता है ।''बहुत' भी क्रिया–विशेषण है, क्योंकि यह दूसरे क्रिया–विशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है ।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग।

विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंग।

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष माँगे,

गाहे तव जय गाथा।

जन-गण-मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।